18

क्रूस से जुड़ी बातें

इफिसियों 5:21-32

''... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए'' (इफिसियों 5:25, 26)।

परमेश्वर पापियों से क्रूस पर ही मुलाकात करता है। परन्तु परमेश्वर की आशिषें परमेश्वर की शर्तों पर मिलती हैं, हमारी शर्तों पर नहीं। हमें अपने मनों को बीच के क्रूस पर लगाना आवश्यक है, तभी परमेश्वर अपने उद्धार के बीच हमें रखेगा।

क्रूस प्रमुख है; इससे जुड़ी बातें सबसे ऊपर हैं। यदि आप सूट खरीदने के लिए पैसे खर्च करते हैं, तो उन पैसों का लाभ आपको सूट पहनकर मिलता है। दवा से तन्दुरुस्ती मिलती है, लेकिन तभी यदि उसे समय पर लिया जाए। शीशी में पड़ी रहने वाली दवा किसी काम की नहीं। पौलुस ने कहा, ''क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे'' (1 कुरिन्थियों 1:17)। सामर्थ उसी में है, पर हमारे लिए उससे जुड़ना आवश्यक है।

नया नियम

यीशु ने कहा, ''क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)। बाइबल लहू के बारे में बताने वाली पुस्तक है, ''लहू'' शब्द का उल्लेख चार सौ से अधिक बार आया है। क्या हम इतने घमण्डी हैं कि लहू से जुड़ नहीं सकते? क्या यह इतना गन्दा है? परमेश्वर की प्रेरणा रहित लोग यदि इसे लिखते तो उन्होंने इसे आकर्षक बनाकर लिखना था, परन्तु परमेश्वर, जिसने इसे लिखा है, उसने इसे खून से सना ही रहने दिया है।

अधिकतर लोगों को लगता है कि मसीह का क्रूस पराजय था और उसका जी उठना विजय। नया नियम उसकी मृत्यु को विजय बताता है। इब्रानियों 9:15, 16 यीशु को नये नियम या वाचा के मध्यस्थ के रूप में दिखाता है। नियम (या वसीयत) करने वाले के मरने के बाद ही प्रभावी होता है। यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा शैतान से मृत्यु की शक्ति छीन ली। जी उठना उसके मरने की पुष्टि करता है। यीशु ने विजय क्रूस पर ही पाई थी। पौलुस ने कहा कि ''विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था, मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का

खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई'' (कुलुस्सियों 2:14, 15)।

यीशु पवित्र शास्त्र की कुंजी है। आप उसे हर आयत में देख सकते हैं। ''जीवित वचन'' केवल ''लिखित वचन'' में ही मिलता है।

आइए हम केवल मसीही बनें। यह *पूर्णवाक्य* है! मुद्दा अधिकार का है कि हम बाइबल की बात मानें या न? आइए हम केवल मसीह की कलीसिया के लोग ही बनें, ... न इससे अधिक, न इससे कम। आप पहली शताब्दी की कलीसिया के लोग बनना चाहेंगे? आप बन सकते हैं! अगर आप परमेश्वर के वचन को मानते हैं तो वह आपको उस कलीसिया में मिला लेगा।

नये नियम की कलीसिया

सुसमाचार के वृत्तांत यीशु पर केन्द्रित हैं; प्रेरितों के काम से प्रकाशितवाक्य तक उसकी कलीसिया पर केन्द्रित हैं। यीशु ने पतरस से प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (मत्ती 16:13-20)। उसने अपने लहू से कलीसिया को खरीदा (प्रेरितों 20:28)। उसने कलीसिया से प्रेम किया और इसके लिए अपने आप को दे दिया (इफिसियों 5:22-30)। जैसे पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए, वैसे ही यीशु ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया ताकि समय के अन्त में उसे अपने लिए तेजस्वी कलीसिया पेश करे (आयतें 25-27)। उसके लहू के लाभ उसकी कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा ही मिलते हैं।

मसीह को उसकी कलीसिया से अलग नहीं किया जा सकता। मसीह को शारीरिक देह देकर उसकी की आत्मिक देह को खरीदा गया। कलीसिया ''परमेश्वर का अनन्त परिवार'' है। पृथ्वी पर कोई भी और वह काम नहीं कर सकता, जो वचन के अनुसार काम करने वाली स्थानीय कलीसिया कर सकती है। पृथ्वी पर यीशु कलीसिया को ही छोड़ गया है। वह लोगों के बनाए संगठनों के लिए नहीं मरा, बल्कि वह केवल अपनी कलीसिया के लिए मरा, जोकि उसकी देह है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18)। एकता और समानता केवल कलीसिया में ही मिलती है। यीशु ने क्रूस के द्वारा दोनों को परमेश्वर के साथ एक ही देह में मिलाकर दीवार गिरा दी (इफिसियों 2:13-22)। कलीसिया एक है न कि बहुत सी।

आप कहेंगे, ''पर कलीसिया तो बचा नहीं सकती!'' बिल्कुल सही है! बचाने वाला मसीह है, कलीसिया तो बचाई हुई या उद्धार पाई हुई है। उद्धार पाए हुए लोग ही कलीसिया में मिलाए जाते हैं (प्रेरितों 2:41-47)। अगर आप उद्धार पाए हुए हैं, तो आपको कलीसिया में मिलाया गया है; अगर आपको कलीसिया में मिलाया गया है तो आप उद्धार पाए हुए हैं। परमेश्वर भूलता नहीं है। *कलीसिया के बाहर उद्धार पाए हुए लोग नहीं हैं;* आप मसीह की बात करते हैं तो आपको कलीसिया मिल जाती है। कलीसिया विश्वव्यापी है, पर मसीह की कलीसिया में बने रहने का एकमात्र ढंग इसकी स्थानीय मण्डली का सक्रिय सदस्य होना है। पृथ्वी पर, अडोल और सुरक्षित जगह स्थानीय कलीसिया से अधिक और नहीं हो सकती।

कई लोग कहते हैं, ''मैं संगठित धर्म के विरुद्ध हूं!'' इसका अर्थ उसे ''असंगठित धर्म'' पसन्द है। पर मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है, ''मैं मसीह से तो प्रेम करता हूं पर कलीसिया को नहीं मानता।'' यह बात न तो वचन के अनुसार है, और न ही तर्कसंगत। उनमें से कई लोग

कहते तो नहीं हैं, पर वे किसी को अपनी पत्नी को हानि पहुंचाने या उसका अपमान करने की अनुमति नहीं देंगे। मसीह की कलीसिया अर्थात उसकी दुल्हन का अपमान करके परमेश्वर के सामने खड़ा होने का साहस किसमें है? समय के अन्त में, मसीह अपने लिए एक तेजस्वी कलीसिया पेश करने वाला है, जिसमें ''न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो'' (इफिसियों 5:27)।

प्रभु का दिन, प्रभु भोज

प्रभु भोज हमें क्रूस से जोड़ता है। आरम्भिक कलीसिया प्रभु के हर दिन (प्रभुवार) यानी रविवार को इकट्ठा होती थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; देखें प्रेरितों 2:42; इब्रानियों 10:25)। प्रभु भोज इकट्ठे में दिया जाता था। मसीही लोग अकेले प्रभु भोज लेकर इकट्ठा नहीं होते थे। जो कलीसिया इकट्ठी नहीं होती, वह जीवित नहीं रह सकती। समुदाय के रूप में कलीसिया में जीवन है (प्रेरितों 2:42)।

जब कलीसिया इकट्ठी होती है तो मसीह भी वहीं होता है। यीशु मेज़बान है, मेहमान नहीं। प्रभु भोज कलीसिया का सेक्रामेंट नहीं है, जो हमें क्षमा करता हो, यह तो इस बात की घोषणा करने की यादगार है कि हमें क्षमा किया गया है। यीशु ने एक ही आज्ञा दी है, ''मुझे स्मरण रखो'' (लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 10:16; 11:23-26)। उसकी एक ही बाइबल, एक ही रोटी, एक ही कटोरा, एक ही देह, एक ही लहू और एक ही काया है। अच्छा नियम यही है; प्रभु भोज प्रभु के हर दिन और प्रभु का कोई भी दिन प्रभु भोज के बिना नहीं, विचार करें कि उसमें क्या इस्तेमाल किया गया: अखमीरी रोटी और दाखरस। ये चिह्न उसकी देह का स्मरण कराते हैं। रोटी और कटोरे की जगह किसी और चीज़ के इस्तेमाल की बात सोची भी नहीं जा सकती।

कलीसिया धार्मिक छुट्टियों में नहीं बढ़ती, बल्कि यह प्रभु भोज के समय बढ़ती है। इसे न ले पाने का अर्थ कलीसिया को कमज़ोर और बीमार करना है (1 कुरिन्थियों 11:23-30)। प्रभु भोज संसार की सबसे बड़ी यादगार है। कलीसिया का हर सदस्य इसमें भाग ले सकता है। यह हमारा ध्यान वचन पर, क्रूस पर और उसकी ओर से मिली क्षमा की ओर दिलाता है। इसके सदस्य ''जब तक वह दोबारा न आ जाए, तब तक प्रचार करते'' हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)। यही कारण है कि हम प्रभुभोज उन लोगों के लिए ले जाते हैं, जो घरों से आ नहीं सकते। वे भी देह के अंग हैं। प्रभु भोज एक यादगार है, जो कलीसिया के आस-पास रहती है।

बपतिस्मा

क्रूस का फिर से समाज के केन्द्र में रखा जाना आवश्यक है न कि केवल चर्च बिल्डिंग की छत के ऊपर। यीशु को दो मोमबत्तियों के बीच में किसी कैथेड्रल में नहीं, बल्कि दो डाकुओं के बीच में क्रूस पर चढ़ाया गया था। हम सब को यह सवाल उठाने (और इसका जवाब देने) की आवश्यकता है कि ''उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' कई लोग लूका 18:9-14 के आधार पर ''पापी की प्रार्थना'' का सुझाव देते हैं, जिसमें चुंगी लेने वाले ने प्रार्थना की थी कि ''हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।'' इस प्रार्थना को उद्धार पाने के ढंग कहना, वचन का अध्ययन करना या वचन मानने या दोनों हमारी असफलता को दिखाता है। इस कहानी में फरीसी और चुंगी लेने वाला व्यक्ति मन्दिर में जाने वाले जातिभाई यहूदी थे। उनमें से कोई भी परमेश्वर के सामने पहली बार

आने वाला पापी नहीं था। एक घमण्डी था, जबकि दूसरा पश्चात्ताप से भरा हुआ, शिक्षा यही है। यीशु का यह दृष्टांत, क्रूस से, प्रेरितों के काम की पुस्तक से, ग्रेट कमीशन दिए जाने से, पिन्तेकुस्त के दिन से, सुसमाचार सुनाए जाने से और कलीसिया के आरम्भ होने से बहुत पहले दिया गया था। यह घटना मुक्ति की नहीं थी। यीशु को लोग जानते नहीं थे और उन्हें उसकी आवश्यकता नहीं थी या इस कहानी में उसका नाम नहीं था।

बपतिस्मा पापियों को क्रूस से जोड़ता है। रोमियों 6:3 पढ़ें। इस कार्य में हम यीशु के लहू के सम्पर्क में आते हैं; पृथ्वी पर गैर-मसीही के लिए उससे सम्पर्क करने की जगह यही है। इसलिए इसे कलीसिया का व्यर्थ संस्कार बनाकर इसके महत्व को कम न करें।

सच तो यह है कि यीशु के स्वर्ग पर वापस चले जाने के बाद पवित्र शास्त्र में बिना बपतिस्मे के मसीही बनने की बात मिलती ही नहीं। पहली शताब्दी की कलीसिया के इतिहास में ऐसा नहीं मिलता। बपतिस्मा उद्धार में एक अहम घटना है। यीशु ने बपतिस्मे को ग्रेट कमीशन में रखा (मरकुस 16:15, 16)। पापियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाता है (मत्ती 28:18-20)। सुसमाचार के संदेश का सार मसीह का मारा जाना, गाड़ा जाना और जी उठना है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। पापियों को मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में बपतिस्मा दिया जाता है (रोमियों 6:3-6; कुलुस्सियों 2:12)। बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति प्रभु को ग्रहण करके उसे पहन लेता है (गलातियों 3:26-28)। वचन के अनुसार लिया गया बपतिस्मा पापी को मसीही बना देता है (प्रेरितों 2:38)।

बपतिस्मा मनुष्य की योग्यता का काम नहीं, बल्कि परमेश्वर का काम है। हर पापी के लिए सुनना, विश्वास करना, मन फिराना और यीशु का अंगीकार करना आवश्यक है। यह काम मेरे लिए कोई और नहीं कर सकता, पर मुझे बपतिस्मा किसी और से ही लेना पड़ेगा। मूल में पापियों को ही ''बपतिस्मा मिलता है।'' इफिसुस में बारह लोगों को पौलुस द्वारा दोबारा बपतिस्मा दिया गया था, क्योंकि पहले उन्हें गलत बपतिस्मा मिला था (प्रेरितों 19:1-7)। पौलुस का मानना था कि बपतिस्मा आवश्यक है और इसे सही ढंग से लिया जाना आवश्यक है।

बपतिस्मा बचाता है (1 पतरस 3:20, 21)। पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों को बपतिस्मा दिए जाने की आवश्यकता थी (प्रेरितों 2)। इथियोपिया के अधिकारी के लिए भी बपतिस्मा लेना आवश्यक था (प्रेरितों 8:26-40)। पौलुस तक को भी बपतिस्मा लेना आवश्यक था (प्रेरितों 9; 22:16)। कुरनेलियुस को, जो अन्यजाति (गैर-यहूदी) था, बपतिस्मे की आवश्यकता थी (प्रेरितों 10)। इन सभी पदों को पढ़कर कौन है, जो यह निष्कर्ष नहीं निकालेगा कि हर ज़िम्मेदार व्यक्ति के लिए बपतिस्मा आवश्यक है?

क्रूसित जीवन

क्रूस का फल क्रूस पर चढ़ाया गया जीवन है। पौलुस ने कहा, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है, ...'' (गलातियों 2:20, 21)। यीशु, ने मरने से पहले जीवन जीया। उद्धार मुफ़्त मिलता है, पर इसके लिए हमें सब कुछ यानी अपने जीवन देने पड़ते हैं! ऐतिहासिक अर्थ में, यीशु जी उठा है; पर पवित्र अर्थ में यीशु आज भी क्रूस पर है। कलीसिया क्रूस के द्वारा अस्तित्व में आई थी और क्रूस की अभिव्यक्ति के रूप में

जीवित है। हम क्रूस के पास आते और क्रूस पर रहते हैं, जैसा कि कुलुस्सियों 3:1–4 में पौलुस ने कहा है।

उद्धारकर्त्ता का संदेश क्रूसित सेवकों द्वारा अच्छी तरह दिया जा सकता है। यीशु हमें मरने के लिए बुलाता है, पौलुस हर रोज़ मरता था (1 कुरिन्थियों 15:31)। कलीसिया को जीवित रहना तभी आ सकता है, यदि इसमें मरने का साहस है। मसीही व्यक्ति को उस संसार के बजाय, जिसे बचाने के लिए मसीह मरा, उस संसार जैसा नहीं होना चाहिए, जिसे बचाने के लिए मसीह आया। किसी को बाइबल *उतनी* ही आती है, जितना उसका जीवन उसके अनुसार है। परमेश्वर को अपने दिन का सप्ताह के पहले दिन का, अपने वेतन के भाग का फल और अपने मन में पहली जगह दें।

जब आप विश्वास आज्ञापालन, लहू की पुस्तक, खून खरीदी कलीसिया, प्रभुभोज की यादगार या बपतिस्मे को कमज़ोर करते हैं तो क्रूस से जुड़ने का और कोई तरीका नहीं रहता।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!